''राजाराम मोहन राय के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिदृश्य में उपादेयता: एक अध्ययन''

डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदी*

व्यक्ति अपने जीवन में अनेक प्रकार के परिवर्तनों से होकर आगे बढ़ता है। बालक जन्म के समय बुद्धि होते हुए भी अज्ञानी होता है परन्तु जैसे–जैसे वह विकसित होता है उसके अन्दर सांसारिक गतिविधियों एवं अनुभवों का ज्ञान प्राप्त होता रहता है। बालक को जिस प्रकार की शिक्षा–दीक्षा प्रदान की जाती है वह उसी प्रकार का व्यवहार सीखता है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं प्रगति के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। महात्मा गाँधी के शब्दों में, ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के शरीर मन और आत्मा में अन्तर्निहित सर्वोत्तम अंश का सम्पूर्ण प्रकटीकरण है''।

किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा एक सशक्त माध्यम है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान और कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिमार्जन किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही किसी भी नागरिक को योग्य, चरित्रवान एवं सुसंस्कारवान बनाया जा सकता है।

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में – ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

जगतगुरू शंकराचार्य के अनुसार – ''सा विद्या या विमुक्तये।''

प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात का मत – ''शिक्षा का अर्थ उन सर्वमान्य विचारों को विकसित करना है जो प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में विलुप्त हैं।''

राजाराम मोहन राय का जन्म 22 मई 1772 ई. को बंगाल के हुगली जिले के राधानगर नामक ग्राम में हुआ था। काशी की भूमि पर आपने मूर्तिपूजा के विरूद्ध ''हिन्दुओं की मूर्तिपूजा एवं धर्म'' विषय पर लेख लिखा। इस लेख में कर्मकाण्डों के नाम पर व्याप्त अंधविश्वासों पर विस्तार से वर्णन किया गया है। राजाराम मोहन राय ने सन् 1821 ई0 में एकेश्वरवादी समिति की स्थापना की तथा 1828 ई0 में ब्रह्म समाज की स्थापना की। आपके जन आन्दोलन के कारण लार्ड विलियम बेटिंक ने दिसंबर 1829 ई0 में सती प्रथा निरोधक अधिनियम पारित कर दिया। 22 वर्ष की आयु में आप ने अंग्रेजी भाषा में दक्षता प्राप्त कि इसके साथ ही आप फारसी, बंगला, संस्कृत और फ्रेंच एवं लैटिन आदि भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान रखते थे।

आपने समाज में व्याप्त कुव्यवस्थाओं, बाल–विवाह, बहुविवाह, मानव बलि आदि का विरोध किया तथा विधवा पुनर्विवाह का जीवन पर्यन्त समर्थन करते रहे। राजाराम मोहन राय सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों, अशिक्षा, निर्धनता, छूआ–छूत, और दासता को सामाजिक अपराध मानते थे। आप ने इस प्रकार समाज में व्याप्त

*सहायक आचार्य (शिक्षाशास्त्र) उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त वि०वि० इलाहाबाद

कुव्यवस्थाओं को जड़ से मिटाने का संकल्प लिया। इस महान दर्शनशास्त्री एवं मानव के उत्थान के लिए निरन्तर कार्य करने वाले मनीषी का देहावसान 27 सितम्बर 1833 ई0 को हो गया।

राजाराम मोहन राय ने अपने जीवन काल में हिन्दी, संस्कृत, अंग्रजी, अरबी, फारसी एवं बंगला भाषा में कई पत्र पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का प्रकाशन किया है। जो आज के परिदृश्य में बहुत ही प्रासंगिक है।

राजाराम मोहन राय के अनुसार शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का विकास होता है। शिक्षा से ही व्यक्ति समाज, राष्ट्र एवं विश्व के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है। शिक्षा से ही व्यक्ति के अन्दर नैतिक एवं चारित्रिक गुणों को विकसित किया जा सकता है।

राजाराम मोहन राय का स्पष्ट मत था कि आत्मा की उन्नति के लिए शिक्षा ही एक सशक्त माध्यम हो सकती है। जन्म के समय प्रत्येक शिशु में बुद्धि होती है लेकिन अज्ञानता के कारण वह पशुवत होता है। जैसे–जैसे शिशु बड़ा होता है, उसकी शिक्षा उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों के द्वारा प्रदान की जाती है। पारिवारिक शिक्षा से बालक के अन्दर नैतिक एवं चारित्रिक गुणों का सृजन होने लगता है। बालक परिवार व समाज के मध्य जीवन–यापन करते हुए मानवता की शिक्षा ग्रहण कर अपना विकास करता है। राजाराम मोहन राय के अनुसार व्यक्ति को आधुनिक एवं वैज्ञानिक शिक्षा प्रदान कर ज्ञानवान एवं विवेकशील प्राणी बनाया जा सकता है।

शिक्षा का उद्देश्य :–राजाराम मोहन राय की शिक्षा व्यवस्था, धर्म, विज्ञान एवं आधुनिक शिक्षा के समन्वय से सम्बन्धित था। उनके अनुसार बालक को ऐसी शिक्षा प्रदान करनी चाहिए उसके अन्दर निहित शक्तियों का सम्पूर्ण विकास किया जा सके। राजाराम मोहन राय के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक के अन्दर सत्य, अहिंसा, न्याय, धर्म, धैर्य, सद्भाव, परोपकार, कौशल, अनुशासन, दया एवं प्रेम आदि गुणों को विकसित कर सके। इन गुणों से युक्त व्यक्ति ही अपने विकास के साथ–साथ समाज, राष्ट्र एवं विश्व के कल्याण हेतु सतत् प्रयत्नशील हो सकता है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मात्र सूचना प्रदान करना या सूचना ग्रहण करने तक सीमित नही होना चाहिए, बल्कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे वह ज्ञान प्राप्त कर जनमानस के कल्याण हेतु कार्य कर सके।

चारित्रिक एवं नैतिक शिक्षा :– राजाराम मोहन राय के अनुसार किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आकलन सर्वप्रथम उसके द्वारा किए जाने वाले व्यवहार से किया जाता है। व्यक्ति का व्यवहार जितना उत्तम होगा उसका चरित्र भी उतना ही उच्चकोटि का होगा। बालकों के अन्दर चारित्रिक गुणों के निर्माण के लिए उत्तम शिक्षा एवं उत्तम संगति का होना आवश्यक है। अतः बालकों की शैक्षिक व्यवस्था में नैतिक शिक्षा पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए।

नैतिक शिक्षा के द्वारा बालक को सदाचारी, कर्तव्यनिष्ठ व ईमानदार बनाया जा सकता है। उनके अनुसार व्यक्ति के द्वारा अच्छे कार्य को करने से ही सद्गुणों का विकास होता है एवं सद्आचरण से अच्छे चरित्र का निर्माण होता है।

वे बालकों के अन्दर नैतिक शिक्षा के माध्यम से सहानुभूति, सर्वधर्म समभाव, विश्वबंधुत्व, प्रेम, दया, करूणा, आपस में सहयोग व राष्ट्रीयता के गुणों का विकास करना चाहते थे।

धर्म आधारित शिक्षा :– राजाराम मोहन राय धार्मिक शिक्षा के द्वारा बालकों के अन्दर मानवीय गुणों को विकसित करने के पक्षधर थे। उनका मानना था कि सभी धर्म बालकों को सत्य के पथ पर चलने व जीवन में ईमानदारी से कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। धार्मिक शिक्षा ग्रहण कर बालक समाज में व्याप्त कुरितियों, पाखण्डों व अंधविश्वासों को समाप्त कर सकते हैं। राजाराम मोहन राय के अनुसार धर्म आधारित शिक्षा के द्वारा ही लोगों के अन्दर सदभावना को विकसित किया जा सकता है। वे सभी धर्मों का समान रूप से आदर व सम्मान करने के पक्षधर थे। राजाराम मोहन राय के अनुसार विद्यालय की शिक्षा प्रार्थना सभा से प्रारम्भ होनी चाहिए। उन्होंने शिक्षा में धर्म को प्रधानता प्रदान की है।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा को महत्व :–राजाराम मोहन राय राष्ट्र के प्रत्येक नागरिकों को आधुनिक ज्ञान एवं विज्ञान की शिक्षा प्रदान करने के समर्थक थे। राजाराम मोहन राय का अंग्रेजी शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टि कोण नहीं था बल्कि वे चाहते थे कि देश के नागरिक मातृ भाषा के साथ ही अन्य भाषाओं का ज्ञान भी प्राप्त करें। राजाराम मेाहन राय को कई भाषाओं में दक्षता प्राप्त थी। कई भाषाओं का ज्ञान उनके व्यक्तित्व को स्वतः प्रमाणित करता है कि वे एक योग्य, कर्मठ एवं मुर्धन्य विद्वान थे। राजाराम मोहन राय के अनुसार बालकों को ऐसी शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जिससे वे वैश्विक स्तर पर लोगों के अन्दर समन्वय एवं एकता स्थापित कर सकें। इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से वे ये संदेश देना चाहते थे कि सम्पूर्ण जगत एक है तथा यह जगत एक ही सत्ता द्वारा निर्मित है। राजाराम मोहन राय का ऐसा मानना था कि पूरा संसार एक है इसलिए उसमे वास करने वाले सभी जन भी एक है। वे वैश्विक स्तर पर जनमानस के अन्दर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जागृत करना चाहते थे। जिससे विश्व के सभी नागरिक अपने राष्ट्र के साथ–साथ विश्व के कल्याण की चिन्ता करते हुए विकास के पथ पर अग्रसित हो सके।

प्राचीन शिक्षा :– प्राचीन कालीन सभ्यता एवं संस्कृत की जानकारी बालकों को प्राप्त हो इसके लिए राजाराम मोहन राय चाहते थे कि बालकों को आधुनिक शिक्षा के साथ ही प्राचीन कालीन शिक्षा को भी पढ़ने के अवसर प्रदान किए जाय। प्राचीन कालीन शिक्षा के अध्ययन से ही बालकों को उस समय के सभ्यता एवं संस्त की जानकारी प्राप्त हो सकती है। प्राचीन कालीन, किन सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का अनुसरण आज के वर्तमान परिदृश्य में उचित है तथा कौन–कौन सी विचारधाराएँ आज के लिए प्रासंगिक है, इसके विषय में जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार की शिक्षा के अध्ययन से वर्तमान समाज में व्याप्त कुरितियों, कुप्रथाओं एवं तरह–तरह की विसंगतियों को समाप्त किया जा सकता है।

राजाराम मोहन राय वेद शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान थे। राजाराम मोहन राय का भारतीय संस्कृत एवं दर्शन के प्रति अपार श्रद्धा थी। आपके अनुसार ''हिन्दू

अध्यात्मवाद कानून, और साहित्य की पूर्ण शरीर वेदो में है।''

राजाराम मोहन राय के अनुसार प्राचीन एवं पाश्चात्य शिक्षा के गुणों के आधार पर ही बालकों की शिक्षा व्यवस्था की व्यूह रचना की जानी चाहिए। शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे आम जनमानस को वास्तविकता एवं सत्यता की जानकारी प्राप्त हो सके एवं जीविका के अवसर आसानी से सुलभ हो सकें।

नारी शिक्षा :– राजाराम मोहन राय नारी जगत के उत्थान के लिए अपने जीवन काल में निरन्तर प्रयासरत रहे। समाज के संकीर्ण एवं कुंठित विचार धारा के लोगों ने नारियों की स्वतंत्रता पर पूर्णतया पाबन्दी लगा रखी थी, नारी का अपना कोई अस्तित्व नहीं था। नारी को समाज ने दासता की जंजीरों में जकड़ रखा था। समाज ने नारी की स्वतन्त्रता पर पूर्णतया अंकुश लगा रखा था और उन्हें स्वतन्त्र रूप से जीने का अधिकार नही था। इस प्रकार के कृत्य को देखकर राजाराम मोहन राय अत्यन्त दुखी एवं व्यथित थे। नारी समाज के उत्थान के लिए उन्होंने तरह–तरह के जन आन्दोलन चलाए। उनके अनुसार शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम हो सकता है जिसके द्वारा नारी को समाज के आडम्बर से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

राजाराम मोहन राय का मत था कि नारी दृढ़, सहिष्णु, निष्ठावान, दयावान एवं साहसी एवं ज्ञानवान होती है। शिक्षा के द्वारा महिलाओं को उनके अधिकार के प्रति सचेष्ट किया जा सकता है। जब महिलाएँ शिक्षित हो जायेगी तब वे अपने अधिकार के प्रति जागरूक होकर समाज में व्याप्त बुराईयों एवं अन्याय के खिलाफ आवाज बुलन्द कर अपने अस्मिता, स्वाभिमान व अधिकार की रक्षा करने में स्वंय सक्षम हो सकती है।

अशिक्षित होने के कारण ही महिलाएँ पुरूषों के द्वारा किए जा रहे अत्याचारों व क्रूरता को सहन करती है। किसी भी देश के उन्नयन के लिए आवश्यक हैं कि उस देश की महिलाओं के लिए शिक्षा की समुचित व्यवस्था उपलब्ध हो। महिलाएँ यदि शिक्षित होगी तो जन्म लेने वाले शिशुओं में अच्छा संस्कार डाल सकती है। कहने का आशय है कि किसी भी राष्ट्र के विकास में युवा एवं युवतियों का योगदान होता है। अतः नारी शिक्षा के लिए समाज के प्रबुद्ध वर्ग को आगे आना होगा तथा सभी महिलाओं को शिक्षा का समान अवसर प्राप्त हो इसके लिए बिना किसी भेद–भाव के कार्य करना होगा।

राजाराम मोहन राय का अभिमत था कि महिलाएँ पुरूषों के समान शिक्षा प्राप्त कर सदियों से अपने ऊपर हो रहे अत्याचार को समाप्त कर सकती है तथा अपने ज्ञान से समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में सहयोग प्रदान कर सकती है।

शारीरिक शिक्षा :– राजाराम मोहन राय के अनुसार बालकों के उत्तम स्वास्थ्य के लिए विद्यालयों में स्वास्थ्य शिक्षा की पढ़ाई अनिवार्य रूप से प्रारम्भ होनी चाहिए। उनके अनुसार जब बालक शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से स्वस्थ्य होगें तभी उसके तन एवं मन में अच्छे विचार आ सकते हैं। बालक शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य हो इसके लिए वे आध्यात्मिक शिक्षा पर बल देते थे। उनके अनुसार बालक जब विद्यालयों में प्रार्थना सभा के समय ध्यान मग्न होंगे, तब उनके अन्दर

अनुशासित रहने की भावना विकसित होगी। स्वास्थ्य शिक्षा के द्वारा छात्र अपने स्वास्थ्य को उत्तम बनाकर मानसिक एवं शारीरिक रुप से स्वस्थ्य होकर संयमित एवं आचरण युक्त व्यवहार कर सकते हैं। अनके अनुसार – ''छात्रों की संयमित एवं विनियमित दिनचर्या ही उनके स्वास्थ्य की कुंजी होती है।''

राजाराम मोहन राय के शैक्षिक विचारों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता एवं महत्व :– राजाराम मोहन राय महान दार्शनिक, शिक्षाविद तथा महान समाज सुधारक थे। वे समाज में व्याप्त कुरितियों एवं कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए जीवन पर्यन्त संर्घषरत रहे। राजाराम मोहन राय के द्वारा किए गये शैक्षिक एवं सामाजिक कार्य, समाज में व्याप्त बुराइयों को जड़ से समाप्त करने के लिए बहुत ही प्रासंगिक है, परन्तु उनके द्वारा किए गये शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यों को उचित स्थान प्राप्त नही हो सका। राजाराम मोहन राय के द्वारा शैक्षिक जगत के उत्थान के लिए किए गये कार्यों की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए अपितु उनके द्वारा अभिव्यक्त विचारधाराओं को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समाहित करके शैक्षिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए उपयोग किया जाना चाहिए।

राजाराम मोहन राय के शब्दों में – ''शिक्षा, आत्मोन्नति का साधन है, इससे धार्मिक एवं नैतिक स्तर ऊँचे उठते है। यह सामाजिक अन्याय एवं कुरीतियों को दूर भगाने का साधन है।''

राजाराम मोहन राय का अभिमत था कि धार्मिक शिक्षा से ही व्यक्ति के अन्दर नैतिक, चारित्रिक एवं सामाजिक गुणों को विकसित किया जा सकता है। आप के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे व्यक्ति का सर्वांगिण विकास एवं व्यक्ति को आत्मानुभूति की प्राि त हो सके। शिक्षा से ही समाज में व्याप्त समस्त बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है।

वर्तमान शिक्षा से व्यक्तियों के अन्दर मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक गुणों का समावेश नहीं किया जा सकता। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था बालक के अन्दर सामाजिक एवं नैतिक गुणों को विकसित करने में सक्षम नहीं है, जिसके कारण भारत की सभ्यता एवं संस्ति का संरक्षण करना कठिन हो रहा है। वर्तमान शिक्षा के द्वारा व्यक्ति मात्र साक्षर या किसी क्षेत्र विशेष में विशेषज्ञता प्राप्त कर रोजगार के अवसर तो प्राप्त कर सकता है, परन्तु इस प्रकार कि शिक्षा से सत्य–असत्य, धर्म–अधर्म, नैतिक–अनैतिक इत्यादि में विभेद नहीं कर सकता।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में धार्मिक एवं सामाजिक पहलूओं को समाहित करके समाज में व्याप्त कुरीतियों, कुप्रथाओं, अन्यायों, अंधविश्वासों एवं कुसंस्कारों को समाप्त किया जा सकता है। राजाराम मोहन राय ने समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के अवगुणों जैसे– जात–पात, छूआ–छूत, क्षेत्रवाद, धर्मवाद, कुप्रथा, अंध ाविश्वास इत्यादि सामाजिक बुराईयों को जड़ से समाप्त करने के लिए जीवनभर संघर्ष करते रहे। राजाराम मोहन राय के द्वारा मानव विकास के लिए किए गये संघर्षों एवं प्रयासों को यदि वर्तमान परिदृश्य में स्वीकार कर लिया जाय तो निश्चित ही भारतीय एकता, अखण्डता, अस्मिता एवं समृद्धि को बनाए रखने में सफलता प्राप्त हो सकती है।

राजाराम मोहन राय के शैक्षिक उद्देश्यों को यदि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में समाहित कर लिया जाय तो निश्चित ही इससे वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सार्थक सुधार लाया जा सकता है। राजाराम मोहन राय बालकों के पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों के साथ–साथ आध्यात्मिक विषयों को भी समाहित करने के पक्षधर थे।

आज की वैज्ञानिक शिक्षा व्यवस्था से छात्रों के अन्दर वैज्ञानिक शिक्षा का पूर्ण ज्ञान प्रदान नही किया जा सकता है। अनुपयुक्त शिक्षा के कारण राष्ट्र के योग्य वैज्ञानिकों का पलायन अन्य राष्ट्रों की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। इसे रोकने के लिए शिक्षार्थियों को वैश्विक स्तर पर नित नये हो रहे शोधों की जानकारी अपने शिक्षार्थियों को योग्य शिक्षकों के माध्यम से प्रदान करने होगें। अप्रासंगिक पाठ्यक्रमों को परिमार्जित एवं बदलने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रमों को समय के अनुसार परिवर्तित कर समय के अनुरूप अद्यतन करना होगा। वर्तमान पाठ्यक्रम से छात्रों के अन्दर नैतिक एवं चारित्रिक गुणों को विकसित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार के पाठ्यक्रम से छात्रों को मात्र रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं लेकिन उससे समाज एवं राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता।

राजाराम मोहन राय के अनुसार पाठ्यक्रम में व्यावहारिक एवं मूल्य परक शिक्षा के विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रमों में समाजोपयोगी विषयों को प्रधानता के साथ समाहित किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम निर्माण के समय जिस कक्षा के शिक्षार्थियों के लिए पाठ्यक्रम की संरचना की जा रही है उनके मानसिक स्तर को दृष्टिगत रखते हुए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम निर्माण में योग्य एवं अनुभवी व्यक्तियों को ही सम्मिलित किया जाना चाहिए।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में छात्र का महत्वपूर्ण स्थान होता है तथा पूरी शिक्षा व्यवस्था शिक्षार्थी केन्द्रित होती है। इस प्रकार नियोजित शिक्षा व्यवस्था से छात्र निसंदेह शिक्षा ग्रहण कर समाज एवं राष्ट्र के उन्नयन में अभूतपूर्व योगदान दे सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. दत्त, कार्तिक चन्द्र : राजाराम मोहन राय : जीवन और दर्शन, लोकभारती प्रकशन, इलाहाबाद 1991, द्वितीय संस्करण।
2. टैगोर, सौमेन्द्र नाथ : राजाराम मोहन राय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली 1989, तृतीय संस्करण।
3. चक्रवती, सूरत : इण्डियन मैसेन्जर, साधारण ब्रह्म समाज, कलकत्ता 1997।
4. बॉल, उपेन्द्र नाथ : राजाराम मोहन राय : जीवन कार्य एवं विचार, साधारण ब्रह्म समाज, कलकत्ता – 1995।
5. नाग, जमुना : राजाराम मोहन राय, हिन्द पाकेट बुक्स दिल्ली – 1988।
6. फाड़िया, बी.एल. : भारतीय राजनीतिक चिन्तन, साहित्य भवन आगरा – 1989।
7. दास, जोगानन्द : राजाराम मोहन राय : दि मार्डनाइजर, साधारण ब्रह्म समाज, कलकत्ता – 1958।
8. मजूमदार, जे.के. : राजाराम मोहन राय एण्ड द वर्ल्ड, साधारण ब्रह्म समाज, कलकत्ता– 1975।
9. मिश्र, आत्मानन्द : भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 1972।